Economics

B.A. Part-I (Hons)

Paper - 2

Module - 2

Economic planning

Manjari Nath - Lecture No - 35

Date ______
Page ______

आर्थिक आयोजन का अर्थ :-

आर्थिक आयोजन अथवा आर्थिक नियोजन की परिभाषा विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से की है -

प्रो० गुन्नार मिर्डल के अनुसार, "आर्थिक नियोजन केन्द्र सरकार के कार्यक्रम की वह महत्वपूर्ण रूपरेखा है जिसमें बाजारी शक्तियों के साथ-साथ राज्य हस्तक्षेप प्रणाली द्वारा सामाजिक प्रक्रिया को आगे ले जाने के प्रयास किए जाते हैं।

प्रो० डी० आर० गाडगिल के अनुसार "आर्थिक विकास के लिए आयोजन का अर्थ है योजना प्राधिकरण, जो अधिकांश अवस्थाओं में राज्य की सरकार ही होती है, के द्वारा आर्थिक क्रिया का बाह्य निर्देशन अथवा नियमन।"

भारतीय योजना आयोग के अनुसार, "आर्थिक नियोजन आवश्यक रूप से सामाजिक उद्देश्यों के अनुरूप साधनों को अधिकतम लाभ के लिए संगठित एवं उपयोग करने का एक मार्ग है। इसके अन्तर्गत उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अपनायी जाने नीति एवं उपलब्ध साधनों

तथा उसके अधिकतम आवंटन के सम्बन्ध से ज्ञान है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर आर्थिक नियोजन में कुछ मूलभूत तत्व पाए जाते हैं जैसे आर्थिक संगठन प्रणाली, लक्ष्यों एवं प्राथमिकताओं का निर्धारण, समयावधि, केन्द्रीय सत्ता नियंत्रण, संसाधनों का अधिकतम उपयोग, पूर्व निर्धारित लक्ष्य एवं लक्ष्यों की प्राप्ति। इसके अतिरिक्त योजना के क्रियान्वयन हेतु क्षेत्र का निश्चित किया जाना भी आवश्यक है, चाहे यह भौगोलिक सीमा गाँव हो, जिला हो, प्रदेश हो या सम्पूर्ण राष्ट्र।

आर्थिक आयोजन या नियोजन से एक ऐसे विवेकयुक्त प्रत्याशित तथा मात्रात्मक आर्थिक विकास का बोध होता है जिसे एक निश्चित समयावधि के अन्तर्गत, एक क्षेत्र विशेष में, विशेष रूप से संस्थागत मानवीय प्रयास द्वारा पूर्वतः निर्धारित साधनों की सहायता से किन्हीं सामाजिक आर्थिक उपलब्धि हेतु प्रयुक्त किया जाता है।

राबिन्स के अनुसार, योजना बनाने का अर्थ उद्देश्य निर्धारित करके कार्य करना, चुनाव और निर्णय करना है और यह सभी आर्थिक क्रियाओं का सार है।

लेविस ने इस बात पर अत्यधिक जोर दिया है कि योजना किस रूप में सामने आए जो देश के आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त कर सके।